

|     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |     |    |    |    |   |   |
|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|-----|----|----|----|---|---|
| 266 | 260 | 253 | 246 | 240 | 237 | 229 | 228 | 194 | 178 | 156 | 119 | 86 | 62 | 49 | 7 | 1 |
| 266 | 260 | 253 | 246 | 240 | 237 | 229 | 228 | 194 | 178 | 156 | 119 | 86 | 62 | 49 | 7 | 1 |

|                                                                  |     |
|------------------------------------------------------------------|-----|
| ༡༥ རྟན་ཐབས་གསུང་ཞེ་བུན་པ། .....                                  | 271 |
| ཐུབ་བསྟན་དོན་བརྒྱད་སྒྲིང་པོའི་མགོན་པོ་འབྲི་གུང་པའི་དམ་ཚེས་དགོངས་ |     |
| པ་གཅིག་པའི་རྣམ་བཤད་སློ་གསར་དགའ་བའི་ན་རྒྱན་དབྱར་གྱི་ར་སྒྲ་ཞེས་བྱ་ |     |
| བ་བཞུགས་སོ། ། .....                                              | 285 |
| ༡༥ ཚེས་འཁོར་གནད་བཟུང་ཚུམས། .....                                 | 287 |
| ༡༥ རྟན་འབྲེལ་གནད་བཟུང་གྱི་ཚུམས། .....                            | 310 |
| ༡༥ མ་ཐར་གནད་བཟུང་ཚུམས། .....                                     | 317 |
| ༤༥ བསྐབ་པ་བྱང་མེས་མ་གནད་བཟུང་གྱི་ཚུམས། .....                     | 329 |
| ༥༥ གསང་ལྷགས་མིག་འཛིན་སྒྲུབ་པའི་ཚུམས། .....                       | 345 |
| ༥༥ ལྷ་སྒྲུབ་སྒྲིང་པ་གནད་བཟུང་གྱི་ཚུམས། .....                     | 367 |
| ༥༥ འབྲས་བྱ་གནད་བཟུང་གྱི་ཚུམས། .....                              | 384 |
| ༥༥ མཚུགས་པོ་དོན་གདམས་པ། .....                                    | 396 |
| དམ་ཚེས་དགོངས་པ་གཅིག་པའི་གསལ་བྱེད་ལྷང་རིགས་སྒྲིང་པོའི་གཏིར་ཞེས་   |     |
| བྱ་བཞུགས་སོ། ། .....                                             | 399 |
| དང་པོ་ནི། མཚོད་པར་བརྒྱད་པ། .....                                 | 399 |
| གཉིས་པ། བར་དུ་དགེ་བ་གཞུང་དོན་ལ་བརྟན། .....                       | 401 |
| ༡༥ ཚེས་འཁོར་གནད་བཟུང་ཚུམས། .....                                 | 401 |
| ༡༥ རྟན་འབྲེལ་གནད་བཟུང་གྱི་ཚུམས། .....                            | 410 |
| ༡༥ གསུམ་པ་མ་ཐར་གནད་བཟུང་གྱི་ཚུམས། .....                          | 416 |
| ༤༥ བསྐབ་པ་བྱང་མེས་མ་གནད་བཟུང་གྱི་ཚུམས། .....                     | 424 |
| ༥༥ གསང་ལྷགས་གནད་བཟུང་གྱི་ཚུམས། .....                             | 433 |
| ༥༥ ལྷ་སྒྲུབ་སྒྲིང་པ་གནད་བཟུང་གྱི་ཚུམས། .....                     | 453 |

શ્રી ૫. ૧ મથકનાં ૭૬ પુસ્તકોની સહાયતાથી નવું બાઈબલનું પ્રકાશન કરવામાં આવ્યું છે.

॥ मङ्गलार्चनम् ॥

..... 476

468